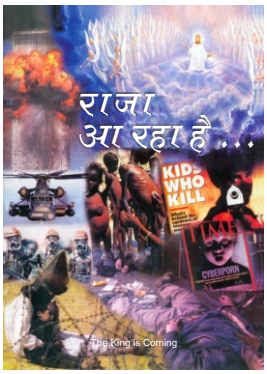

दुखान्त घटनाएं और प्राकृतिक आपदाएं

पृथ्वी और समुद्र में दुर्घटनाएं और विपत्तियाँ, भयानक आग, उग्र चक्रवात, भयावाह ओलावृष्टि, तूफान, प्रचण्ड आंधियाँ, सैलाब, बवण्डर, सुनामी, भूकम्प, फसलों का विनाश और सूखा, भयानक महामारियाँ, मनुष्य और पशु दोनों में प्रत्येक प्रकार की बीमारियाँ, बढ़ती अनैतिकता, वेश्यावृत्ति और बल पूर्वक बलात्कार, खून-ख़राबा, लड़ाईयाँ और लड़ाईयों की अफवाहें, ये सब क्यों हो रहा है ? **"पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आयेंगे. क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, मयारहित, क्षमारहित, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी. विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं बरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे. वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे, ऐसों से परे रहना"** (2 तीमुथियुस 3:1-5).

राष्ट्रीय सीमाएं मिटती जा रही हैं. दुनिया के देश, यूरोप के देशों सहित, संगठित हो रहे हैं. बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ, बैंक, स्टोर्स आदि आपस में विलय करके बड़ा और शक्तिशाली रूप ले रहे हैं. अमीर और भी अमीर होते जा रहे हैं, और ग़रीब अधिक ग़रीब होते जा रहे हैं. ग़रीबों को अनेक प्रकार के नियमों से बांधकर गुलामों में तब्दील किया जा रहा है. बड़े शहरों में आधुनिक तकनीकि और कम्प्यूटर द्वारा संचालित संस्थाएं संसार पर नियन्त्रण करके इसे ढोंगी बना रही हैं.

ये जगत के अन्त के निशानात हैं. यह पहले ही बताया गया है कि राजाओं के राजा प्रभु यीशु मसीह जो जगत का उद्धारकर्ता है, उस के पुनः आगमन से पहले ठीक ऐसी ही घटनाएं घटेंगी इसलिए, यीशु पुनः **कब** आयेगा ? और वह **किस** प्रकार से आयेगा ? **कौन** उद्धार पायेगा और **कौन** नाश होगा ? **भविष्य कैसा होगा ?** ऐसे ही अनेक प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तिका में दिये जायेंगे.

स्वर्गारोहण (रैप्चर)

बहुत से लोग सिखाते हैं कि एक गुप्त स्वर्गारोहण होगा कि संसार से लाखों लोग अचानक ग़ायब हो जायेंगे और बड़े संकट का समय आने से पहले ही वे स्वर्ग पर उठा लिए जायेंगे. शेष लोग पीछे रह जायेंगे. लेकिन, बाइबल इस विषय में क्या कहती है ?

"जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा. क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें ब्याह-शादी होती थी. और जब तक जल-प्रलय आकर उनको बहा न ले गया तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा. उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा. दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जायेगी, और दूसरी छोड़ दी जायेगी. इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा" (मत्ती 24 : 37 - 42).

यीशु के मुंह से निकले ये शब्द बताते हैं कि कुछ का स्वर्गारोहण हो जायेगा, जबकि दूसरे लोग छोड़ दिये जायेंगे. यह तब होगा जब यीशु पुनः आयेगा. यह घटना यीशु के पुनः आगमन के समय पर होगी. बाइबल के दो और हवाले इसका समर्थन करते हैं. **"तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ बादलों पर आते देखेंगे. और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं का इक्ट्ठे करेंगे"** (मत्ती 24 : 30 - 31).

"हे भाइयो, हम नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं. क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गये हैं, उसी के साथ ले आयेगा, क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे. क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जायेगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे. तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे" (1 थिस्सलुनीकियों 4 : 13 - 17).

बाइबल के ये वचन यही कहते हैं कि स्वर्गारोहण केवल तब होगा, जब प्रभु यीशु अपने चुने हुओं को इकत्र करने आयेगा. वास्तव में यह बाइबल वचन यही बताता है कि जीवित धर्मियों का स्वर्गारोहण धर्मी मृतकों के जी उठने से पहले नहीं होगा. तब वे मुर्दे भी जी उठेंगे जो मसीह में विश्वास करते हुए मरे थे और वे जीवित धर्मियों के साथ हवा में प्रभु से मिलने के लिये यीशु के आगमन पर उठालिये जायेंगे. इस प्रकार यीशु के आगमन से पूर्व **गुप्त स्वर्गारोहण** पर लोगों की शिक्षा का बाइबल से कोई संबंध नहीं है.

आज अनेक लोग यह विश्वास करते हैं कि यीशु एक बार फिर इस पृथ्वी पर आकर यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होगा. फिर यहूदी लोग परमेश्वर के विशेष लोगों का दर्जा प्राप्त कर बिना उद्धार पाये हुए लोगों को एक हज़ार वर्ष तक सुसमाचार प्रचार करेंगे. यह शिक्षा भी कुल मिला कर बाइबल में नहीं पायी जाती. वास्तव में, यह भ्रामक है! यीशु स्वयं कहता है कि उसका राज्य इस संसार का नहीं है (यूहन्ना 18 : 36). और, हम पहले ही पढ़ चुके हैं कि जब यीशु वापस आयेगा, तो सब बातों का फैसला हो चुका होगा. फिर यह निश्चय किया जायेगा कि कौन उद्धार पायेगा, और कौन नाश होगा. इस के बाद फिर से **अनुग्रह का समय** नहीं बढ़ाया जायेगा. हमें तो अभी उद्धार के उपहार को स्वीकार या अस्वीकार करना होगा. यीशु के आने के बाद मन परिवर्तन की सारी संभावनाएं समाप्त हो चुकी होंगी.

1 थिस्सलुनीकियों 4: 13- 17 जो हमने अभी पढ़ा है, यह भी बताता है कि यीशु अपने पुनः आगमन पर पृथ्वी को नहीं छुएगा. यह कहता है कि उद्धार पाये हुए लोग बादलों पर उठा लिये जायेंगे. वे यीशु से हवा में मुलाक़ात करेंगे, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों के, और प्रभु यीशु के साथ स्वर्ग पर उठा लिये जायेंगे.

वास्तविक स्वर्गीय स्थान

धर्मी स्वर्ग में उठाये जायेंगे इस में किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए. प्रकाशितवाक्य 4 अध्याय बताता है कि परमेश्वर का सिंहासन और यीशु मसीह स्वर्ग में हैं. इस से थोड़ा आगे हम पढ़ते हैं कि धर्मी लोग स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े थे (प्रकाशितवाक्य 7 : 9). आगे बढ़कर हम पढ़ते हैं कि धर्मी लोग परमेश्वर के राज्य में होंगे. लिखा है : **"फिर मैं ने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा,... और मैंने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर, और उस की मूरत पर, और उस के नाम के अंक पर जयवंत हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा"** (प्रकाशितवाक्य 15 : 1 – 2).

स्वर्ग पर उठाये जाने से थोड़ा पहले, यीशु ने अपने चेलों से कहा, **"मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ. और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊंगा"** (यूहन्ना 14 : 2 – 3).

अपने विदाई संबोधन में उसने अपने चेलों से यह भी कहा, **"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया, और सामरिया, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे. यह कहकर वह उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की आँखों से छिपा लिया. और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरूष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए. और कहने लगे; हे गलीली पुरूषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो ? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आयेगा"** (प्रेरितों के काम 1 : 8 – 11).इन आयतों को एक साथ रख कर देख ने पर हम पाते हैं कि धर्मी लोग स्वर्ग पर उठाये जायेंगे, स्वर्ग वह आत्मिक कनान है जहाँ यीशु के अनुयायी लोग जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं. पौलुस भी विश्वास के नायकों के विषय में लिखते हुए कहता है, **" ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाईं; पर उन्हें दूर से देख कर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं. जो ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं. और जिस देश से वे निकल आये थे, यदि उसकी सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था. पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसीलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, सो उस ने उनके लिए एक नगर तैयार किया है"** (इब्रानियों 11 : 13 – 16).

दूसरे आगमन से पहले संकट का समय

बाइबल स्पष्ट बताती है, कि यीशु के वापस आने से ठीक पहले सब लोगों की परीक्षा होगी, कि वे सृष्टिकर्ता परमेश्वर की आराधना करते हैं या फिर **पशु की छाप** लेते हुए **पशु की पूजा** करते हैं (प्रकाशितवाक्य 14 : 6 – 12). कुछ लोग बताते हैं कि पशु की छाप द्वारा आने वाला सताव का समय **धर्मियों के स्वर्गारोहण** के बाद में आयेगा. किन्तु बाइबल बताती है कि स्वर्ग में पहुँचने से पहले ही धर्मी लोग, उस पशु की मूरत और उसकी छाप पर संघर्ष करके जयवन्त हो चुके होंगे. यूहन्ना इसका वर्णन इस प्रकार करता है : **"और मैं ने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर, और उसकी मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवंत हुए थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा"** (प्रकाशितवाक्य 15 : 2).

अगले पांच अध्याय के बाद प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना लिखता है कि धर्मी विश्वासी लोग परमेश्वर के राज्य में पाये जायेंगे. वह कहता है, **"फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गये, और उन को न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गये थे; और जिन्होंने न उस पशु की, और न उस की मूरत की पूजा की थी, और न उस की छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी, वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे "** (प्रकाशितवाक्य 20 : 4).

धर्मी लोग मेम्ने (मसीह) की सामर्थ से **पशु, उसकी मूरत और उसकी छाप** पर जयवन्त होते हैं. इस प्रकार जो लोग मसीह के आगमन के समय जीवित होंगे वे संकट के समय अर्थात् इस परीक्षा से मसीह के दूसरे आगमन से पहले ही होकर गुज़रेंगे. क्योंकि बाइबल कहती है कि 'धनी और कंगाल, दास और स्वतंत्र सब लोग **पशु की छाप** और **उसकी मूरत** का सामना करेंगे' (प्रकाशितवाक्य 13 : 15 – 18). [इसका विस्तृत अध्ययन करने के लिए विज्ञापन में दी गयी दूसरी पुस्तिकाओं का अध्ययन करें.] सृष्टिकर्ता के रूप में **परमेश्वर की आराधना** करना या **पशु की पूजा** करते हुए उसकी **छाप** लेना. यीशु के दूसरे आगमन से पहले यही सबसे बड़ी और अन्तिम परीक्षा होगी. यीशु को स्वीकार करने का समय **अभी है.** फिर वह आने वाले बड़े संकट में से विजयी होकर निकलने के लिए हमें आवश्यक सहायता और अनुभव प्रदान करेगा. वह हमें परमेश्वर की इच्छानुसार उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए साहस और सामर्थ देगा और हम **पशु और उसकी मूरत**, और उसकी **छाप** पर जय प्राप्त करेंगे.

एक झूठा मसीहा

खैर, आइए हम यीशु के पुनः आगमन की बात करें. कुछ लोग कहते हैं कि यीशु चुप-चाप आ जायेगा. वह कहीं पर एक व्यक्ति को तो कहीं और दूसरे व्यक्ति को दिखाई देगा. लेकिन, यीशु हमें इस धोखे के प्रति सावधान करता है. वह जानता था कि ऐसे धोखे आयेंगे, इसलिए उसने कहाः **"उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहाँ है! या वहां है तो प्रतीति न करना. क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह, और अद्भुत् काम दिखायेंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें. देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है. इसलिये यदि वे तुम से कहें, ''देखो, वह जंगल में है'', तो बाहर न निकल जाना; "देखो, वह कोठरियों में है", तो प्रतीति न करना. क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकल कर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा"** (मत्ती 24 : 23 - 27).

चूंकि हम यह सीख चुके हैं कि **यीशु अपने दूसरे आगमन के समय ज़मीन को नहीं छुयेगा**, फिर हमें किसी के यह कहने पर कि मसीह आ चुका है और अमुक स्थान पर है, यूंही विश्वास कर के मूर्ख नहीं बनना चाहिए. वास्तव में हमने सीखा है कि यीशु आसमान से बादलों के साथ अन्तिम तुरही फूंके जाने के समय आयेगा. जैसे बिलजी पूर्व से पश्चिम तक चकमते हुए सब को दिखाई देती है, ठीक वैसे ही मसीह अपने दूसरे आगमन पर सब को स्पष्ट रूप से दिखाई देगा. आप जानते हैं कि बाइबल मसीह के दूसरे आगमन का वर्णन इस प्रकार करती हैः **"देखो, वह बादलों के साथ आने वाला हैः और हर एक आंख उसे देखेगी. बरन जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे "** (प्रकाशितवाक्य : 1 : 7). इसे इससे और अधिक स्पष्ट नहीं किया जा सकता - जब यीशु पुनः आयेगा तो **सब** लोग उसे देखेंगे. हम यह भी पढ़ते हैं कि धर्मी **हवा में** प्रभु से मिलने के लिए **उठा लिये जायेंगे.** वे यीशु से ज़मीन पर नहीं, हवा में मिलेंगे.

बदल जाना

अब, दूसरे आगमन पर जीवित धर्मियों का क्या होगा ? बाइबल कहती है कि वे सब बदल जायेंगे. लिखा है : **"देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ; कि हम सब तो नहीं सोयेंगे, परन्तु सब बदल जायेंगे और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगाः क्योंकि तुरही फूंकी जायेगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाये जायेंगे, और हम बदल जायेंगे. क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले. और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जायेगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया"** (1 कुरिन्थियों 15 : 51 - 54).

पौलुस इस 'बदल जाने' को इन शब्दों में भी वर्णन करता है, **"पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं. वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदल कर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा"** (फिलिप्पियों 3 : 20 - 21).

बाइबल बताती है कि मानव (आदम और हव्वा) का सृजन परमेश्वर के स्वरूप में हुआ था. वे परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकते थे. उनके पास परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए एक महिमामय देह थी. फिर उन्होंने आज्ञा उल्लंघन के द्वारा वर्जित फल को खाया और पाप के कारण परमेश्वर की महिमा से रहित हो गये (उत्पत्ति 3 : 6 - 9). वे अब परमेश्वर का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकते थे. उनकी देह नाशवान हो गयी. हम सब की भी देह ऐसी ही है.

फिर भी, परमेश्वर चाहता है, कि मनुष्य अपनी मूल दशा को पुनः प्राप्त करके परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हुए जीवित रह सके. यह तो तभी होगा जब यीशु मसीह अपने लोगों को पुनः लेने आयेगा.

सब मृतक कब्रों में हैं

हम यह भी पढ़ते हैं कि **नाशमान अमरता को पहिन लेगा.** अमरता केवल परमेश्वर के ही पास है. बाइबल इसका सत्यापन इस प्रकार से करती है : **"और अमरता केवल उसी (परमेश्वर) की है"** (1 तीमुथियुस 6 : 16).

मृत्यु के साथ ही मनुष्य का जीवन रूक जाता है. लिखा है, **"क्योंकि जीविते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे,परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है. उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी है, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिए उनका कोई भाग न होगा... जो काम तझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना, क्योंकि अधोलोक में जहाँ तू जानेवाला है, न काम, न युक्ति, न ज्ञान और न बुद्धि है"** (सभोपदेशक 9 : 5 - 6, 10). इस प्रकार जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो वह (स्त्री / पुरूष) एक पत्थर के समान जीवनरहित हो जाता है. उनमें जीवन, विचार या सोचने विचारने की शक्ति नहीं रहती. वे भूमि में पड़े रहते और मिट्टी बन जाते हैं. यही कारण है कि एक और चमत्कार होगा. जब यीशु लोगों को उनकी कब्रों से उठायेगा-कितने जीवन के पुनरूत्थान के लिए और कितने दण्ड के पुनरूत्थान के लिए जी उठेंगे (यूहन्ना 5 : 29).

जब यीशु का एक मित्र, लाज़र मर गया और उसे कब्र में रखे हुए चार दिन हो गये थे; यीशु ने उसकी मृत्यु को नींद कहा. फिर उसने कहा कि लाज़र मर चुका था (यूहन्ना 11 : 1 - 44). इस प्रकार, मृतक अपनी कब्रों में **सो** रहे हैं. वे जो यीशु में विश्वास रखते हुए मरे हैं, यीशु के पुनः आने पर जाग जायेंगे. लेकिन दुष्ट लोग एक हज़ार वर्ष के बाद जिलाये जायेंगे. (इसके विषय हम बाद में स्पष्ट करेंगे).

जिस प्रकार से यीशु ने लाज़र को उसकी कब्र से जीवित किया ठीक उसी प्रकार वह अपने धर्मी विश्वासियों को पुनरूत्थान की सुबह उनके विश्राम स्थलों से जीवित करेगा. उस अवसर पर लाज़र को तो नाशमान देह प्राप्त हुई थी, किन्तु धर्मी लोग मसीह के दूसरे आगमन पर अविनाशी देह प्राप्त करेंगे. हम आशा और विश्वास करते हैं, लाज़र भी उन में शामिल होगा.

मसीह के पुनरूत्थान के बिना कोई पुनरूत्थान नहीं

सप्ताह के पहिले दिन मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा मसीह यीशु स्वयं ही पुनरूत्थान पाने वालों में पहिला फल हो गया है (लूका 24 : 1 - 6). पौलुस इसका वर्णन इस प्रकार करता है : **"परन्तु सच मुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गये हैं, उनमें पहिला फल हुआ. क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई ; मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरूत्थान भी आया. और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाये जायेंगे. परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से, पहिला फल मसीह; फिर मसीह के आने पर उसके लोग"** (1 कुरिन्थियों 15 :

जीवन के वृक्ष के पास आने का आपका अधिकार

कल्पना करें कि धर्मी लोग अविनाशी और अमरता की देह प्राप्त करेंगे. कुछ बदलता है- एक आवश्यक बदलाहट! अभी कोई भी परमेश्वर का दर्शन करके जीवित नहीं रह सकता है, लेकिन उस समय धर्मी लोग परमेश्वर को आमने-सामने देखेंगे (प्रकाशितवाक्य 22 : 4). क्या आप इस बदलाव का अनुभव करना चाहते हैं ? मेरा विचार है, आप चाहते हैं. इसलिए प्रतिज्ञा को अभी पकड़ लीजिये! यीशु को चुनने के लिये अभी परमेश्वर आपके हृदय में कार्य कर रहा है कि आप यीशु के लिए **हाँ** कहें. यदि हम मसीह के दूसरे आगमन पर अमरता प्राप्त करना चाहते हैं तो अभी हमें परमेश्वर के प्रति हमारे विचारों और धारणा को बदलना होगा. यह निर्णय हमें स्वयं ही करना होगा क्योंकि परमेश्वर किसी पर दबाव नहीं डालता. यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर प्रेम है.

यह निर्णय कर लेने के बाद, उसका अनुशरण करने की सामर्थ पाने के लिए उससे प्रार्थना करने की आपको आवश्यकता होगी! उसी की सामर्थ में हम विजय पर विजय प्राप्त करेंगे. विजय की प्रतिज्ञाओं की भरमार है उनमें से कुछ एक ये हैं: **"प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा"** (प्रकाशितवाक्य 2 : 10). **"जो जय पाये, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊँगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया"** (प्रकाशितवाक्य 3 : 21). **"धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं (यथार्त् में आज्ञा पालन करते हैं) क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे"** (प्रकाशितवाक्य 22 : 14).

मन का परिवर्तन

पवित्र आत्मा की सामर्थ से जीवित धर्मी, शैतान के आक्रमणों पर जयवन्त होंगे. इसके अतिरिक्त, उसके दूसरे आगमन पर , सभी स्वर्गीय दूतों और पुनरूत्थान प्राप्त धर्मियों के साथ उद्धारकर्ता से मिलने के लिए आवश्यक शारीरिक परिवर्तन का अनुभव करेंगे. तौभी मन के परिवर्तन के लिए क्या कहा गया है ? उत्तर पाने के लिए हम परमेश्वर के वचन को खोलेंगे, **"इसलिए, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जायें, जिस से प्रभु के सन्मुख से विश्राम्ति के दिन आयें"** (प्रेरितों के काम 3 : 19). **"पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे"** (प्रेरितों के काम 2 : 38). **"इसलिए हे भाईयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ : यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है. और इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो"** (रोमियों 12 : 1 - 2). **"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो"** (फिलिप्पियों 2 : 5). **"धन्य हैं वे जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे"** (मत्ती 5 : 8). **"यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है ? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है ? जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिस ने अपने मन को व्यर्थ बातों की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाई है"** (भजन संहिता 24 : 3 -4). **"और उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं"** (प्रकाशितवाक्य 21 : 27). जिस समय यीशु अपने चुने हुओं को इकत्र करने के लिए वापस आयेगा, उस समय परमेश्वर के लोगों की केवल एक **बकिया कलीसिया** जीवित पायी जायेगी (सपन्याह 3 : 12 - 13; प्रकाशितवाक्य 12 : 17). ये लोग **पशु की छाप** का इन्कार करके **परमेश्वर की मुहर** को अपने माथे पर प्राप्त करेंगे. परमेश्वर उन्हें स्वीकार करेगा. बाइबल उनका वर्णन इस प्रकार से करती है: **"और यहोवा ने उससे कहा, इस यरूशलेम नगर के भीतर इधर-उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कार्मों के कारण जो उसमें किये जाते हैं, सांसें भरते और दुख के मारे चिल्लाते हैं, उनके माथों पर चिन्ह कर दे"** (यहेजकेल 9 : 4). अपने हृदयों में परमेश्वर के ज्वलन्त प्रेम के साथ वे परमेश्वर के लोग कहलानेवाले लोगों के लिए रोते-विलाप करते हुए उन्हें उनके धर्म पतित होने के विरूद्ध चेतावनी देंगे. लेकिन केवल परमेश्वर की **शेष संतान** ही पश्चाताप करके मेम्ने (मसीह) का अनुशरण करेंगे. परमेश्वर उन्हें स्वीकार करके अपनी स्वीकृति की मुहर उनके माथों पर लगायेगा. विश्वास से वे पापों की क्षमा और मसीह की धार्मिकता प्राप्त करेंगे. और वे पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर वही करेंगे जो सही है (1 यूहन्ना 1 : 9; 2 : 29). यूहन्ना ने अपने दर्शन में इन उद्धार पाये हुए लोगों को सिय्योन पर्वत पर खड़े हुए देखा. वह उनके चरित्र की परख का वर्णन इस प्रकार करता है : **"ये वे हैं, जो स्त्रियों [= बाइबल विरोधी शिक्षा देने वाली कलीसियाओं-2 कुरिन्थियों 11 : 2] के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैं; ये वे ही हैं कि जहाँ मेम्ना [= मसीह, यूहन्ना 1 : 29] जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं; ये तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिए मनुष्यों में से मोल लिये गये हैं. और उनके मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं"** (प्रकाशितवाक्य 14 : 1 - 5).

इस खंड में बतायी गई सभी, और अनेक दूसरी आयतें हमें यही बताती हैं कि हमारे मन का परिवर्तन अभी होना चाहिए. यदि हमारे मरने या मसीह के दूसरे आगमन से पहले हमारे मन का परिवर्तन नहीं होता है तो हम उद्धार पाने से वंचित रह जायेंगे, और यीशु के साथ स्वर्ग जाने के आयोग्य गिने जायेंगे. केवल वे ही, **जिनके मन शुद्ध हैं** उसके वापस आने पर उसके साथ स्वर्ग में उठाये जायेंगे. ये तो, **पहिला फल** हैं जो मसीह के लिए इकत्र किये जायेंगे.

फसल की कटनी

बाइबल इस बात को स्पष्ट रूप से बताती है, कि जब अनुग्रह और उद्धार के संदेश के साथ चेतावनी का संदेश ऊंचे शब्द के साथ समस्त संसार को सुना दिया जायेगा, फिर जगत का उद्धारकर्ता यीशु मसीह स्वर्ग के बादलों पर आ जायेगा (मत्ती 24 : 14, प्रकाशितवाक्य 14 : 6 – 12). फिर कटाई का समय आरंभ हो जायेगा. यूहन्ना फसल की कटनी का वर्णन इस प्रकार करता है, **"और मैंने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है, जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है. फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकलकर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकार कर कहा, कि अपना हंसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पहुंचा है, इसलिए कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है. सो जो बादल पर बैठा था, उस ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी की गई"** (प्रकाशितवाक्य 14 : 14 – 16).

ये आयतें इस बात का सबूत हैं कि अपने पुनः आगमन के समय पर ही प्रतीकात्मक रूप से पृथ्वी की फसल की कटाई करते हुए यीशु अपने लोगों को इकत्र करेगा. वह उन लोगों को इकत्र करेगा जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ से यीशु के समान चरित्र प्राप्त किया होगा. वे अपने जीवन में यीशु की भलाई, पवित्रता, निष्ठा, और करूणा को प्रकट करते हुए पूरी तरह बदल चुके होंगे. अपने जीवनों में परमेश्वर का अनुग्रह और पवित्र आत्मा से शक्ति प्राप्त करके खुशी से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करेंगे, और यीशु पर विश्वास रखेंगे (प्रकाशितवाक्य 14 : 12; 1 यूहन्ना 5 : 2 – 3).

जब कि **'अनुग्रह का द्वार'** खुला हुआ है, पौलुस हमारे जीवन में उस परिवर्तन का जो अभी होना चाहिए, वर्णन करते हुए कहता है, **"परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं"** (2 कुरिन्थियों 3 : 18). **"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है : और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया"** (गलतियों 2 : 20). **" पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं. और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है. यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी"** (गलतियों 5 : 22 – 25). यूहन्ना इसे इस प्रकार पेश करता है: **"यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उससे जन्मा है"** (1 यूहन्ना 2 : 29). इसके अतिरिक्तः **"धन्य वे हैं जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, (**यथार्त् में **उसकी आज्ञाओं को मानते हैं) क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे"** (प्रकाशितवाक्य 22 : 14). पकी फसल तो वे ही हैं, जिन्होंने अपने घमण्ड को क्रूस पर चढ़ा दिया है, और जो परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ से उस मसीह के चरित्र को प्रकट करते हैं, जो उन्हें लेने के लिए पुनः आ रहा है.

राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु

बाइबल बताती है कि अन्तिम समय में, संसार की विनाशक शक्तियाँ मसीह और उसके अनुयायियों के विरूद्ध युद्ध करेंगी. लिखा है : **"ये मेम्ने से लड़ेंगे और मेम्ना उन पर जय पायेगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है: और जो बुलाये हुए, और चुने हुए, और विश्वासी उस के साथ हैं, वे भी जय पायेंगे"**(प्रकाशितवाक्य 17 : 14). दूसरे आगमन के समय यही यीशु राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होकर आयेगा. वह अपनी संपूर्ण महिमा में प्रकट होगाः **"तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे. और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उस के चुने हुओं को इकठ्ठे करेंगे"** (मत्ती 24 : 30 – 31).

यहां हम पढ़ते हैं कि यीशु **'बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य'** के साथ आने वाला है. धर्मी लोग जो महिमामय देह प्राप्त करेंगे, उन्हें यीशु के महिमामय आगमन से कोई तकलीफ न होगी. वास्तव में वे अति आनन्दित होते हुए कहेंगे, **"देखो, हमारा परमेश्वर यही है, हम इसी की बाट जोहते आये हैं, कि वह हमारा उद्धार करे. यहोवा यही है, हम उसकी बाट जोहते आये हैं. हम उस से उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे"** (यशायाह 25 : 9).

इस अद्भुत दिन की कल्पना करें! महान छुटकारे का दिन! महान उद्धार का दिन!

क्या आप जीवित और मृतकों में से जिलाये गये धर्मियों के आनन्द का आंकलन कर सकते हैं? जब वे उद्धारकर्ता को पुनः आते हुए देखेंगे! उन्होंने उसके आगमन का प्रचार किया है. उन्होंने विरोध, सताव और मृत्यु का सामना किया है. लेकिन शीघ्र ही प्रकट होने वाली महिमा की तुलना में ये परेशानियाँ महत्वहीन हैं! अब वे राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु को उन्हें लेने के लिए आते हुए देखते हैं. वे अति आनन्दित हैं और उनके चेहरे खुशी से चमक रहे हैं. कोई भी कलम उनके आनन्द का वर्णन करने में असक्षम है, जब वे अपने प्रिय उद्धारकर्ता, स्वर्गदूतों की सेना और अपने उन प्रियों को देखते हैं, जो प्राण देने तक प्रभु के प्रति सच्चे और विश्वास योग्य रहे हैं.

सभी की आखें उद्धारकर्ता पर लगी होंगी, और हम परमेश्वर के वचन में पहले ही देख चुके हैं कि उद्धार पाये हुए धर्मी लोग हवा में प्रभु से मिलने के लिए ऊपर उठा लिये जायेंगे. महिमान्वित, स्वतंत्र और पवित्र होकर हवा में उठाया जाना क्या ही अदभुत् अनुभव होगा! अब वे परमेश्वर के साथ सुरक्षित रहेंगे. अब उनके शत्रुओं के हाथ उन तक कभी नहीं पहुंच सकते. अब वे सुरक्षित हाथों में होंगे .

जब वे नक्षत्र मण्डल, आकाश गंगा और ग्रहों को पीछे छोड़ते हुए स्वर्गीय नगर में प्रवेश करने के लिए आकाश से ऊपर उठते हैं, वे चैन की सांस ले सकते हैं, अन्ततः वे मेम्ने के लोहू द्वारा उद्धार पा चुके हैं! अब वे निश्चिंत हैं. यहाँ, शैतान, सताव, अपराधी और मनुष्य की आज्ञाएं नहीं होंगी. शांति, प्रेम, मित्रता जैसे आत्मा के सभी फल यहाँ पाये जायेंगे.

एक हज़ार वर्ष का समय और स्वर्ग में न्याय प्रक्रिया

बाइबल बताती है कि धर्मी लोग स्वर्ग में एक हज़ार वर्ष बितायेंगे. लिखा है; **"फिर मैंने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गये, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गये थे; और उन्होंने न उस पशु की, और न उस की मूरत की पूजा की थी, और न उस की छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे"** (प्रकाशितवाक्य 20:4). यह आयत 1 कुरिन्थियों 6 : 2 से मेल खाती है.**"क्या तुम नहीं जानते, कि पवित्र लोग [=उद्धार पाये हुए लोग] जगत का न्याय करेंगे ?"**

इस प्रकार उद्धार पाये हुए धर्मी लोग स्वर्गीय न्याय में भाग लेंगे. वे किस का न्याय करेंगे ? धर्मियों के केस का उनके पक्ष में पहले ही फैसला हो चुका होगा. यीशु ने विश्वास योग्यता से उनके जीवन का परीक्षण किया है. बाइबल स्वर्गीय न्याय प्रक्रिया के आरंभ होने के विषय इस प्रकार कहती है; **"मैं ने देखते-देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गये, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला; और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे. उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकल कर बह रही थी; फिर हज़ारों-हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों - लाख लोग उसके सामने हाज़िर थे; फिर न्यायी बैठ गये और पुस्तकें खोली गयीं"** (दानिय्येल 7:9-10).

पौलुस इसको स्पष्ट करते हुए कहता है कि प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से अपना हिसाब देना होगा "**सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा"** (रोमियों 14 : 12). हम सामूहिक रूप से न तो नाश होते और न ही उद्धार पाते हैं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से हमारे कामों के अनुसार प्रतिफल पाते हैं.

दूसरे आगमन के समय जीवित पाये जाने वाले लोगों में से अधिकांश लोग स्वर्ग पर नहीं उठाये जायेंगे. उस समय तक उन के केस का निर्धारण हो चुका होगा. लेकिन, उस समय उनका अन्तिम फैसला नहीं सुनाया जायेगा. अब पवित्र लोगों को स्वर्गीय रिकॉर्ड का अवलोकन करने की अनुमति मिलेगी, कि नाश होने वाले लोगों के साथ निष्पक्ष न्याय किया गया है या नहीं. शायद कुछ पति अपनी पत्नियों को स्वर्ग में न पाकर सोचेंगे कि वे स्वर्ग में क्यों नहीं पहुंच सकीं ? स्वर्गीय पुस्तकों में सब कुछ दर्ज है, और धर्मी लोग जगत का न्याय करेंगे. उन्हें पक्का भरोसा होना चाहिए कि सब के साथ निष्पक्ष न्याय किया गया है. आप जानते हैं, हम लोगों का न्याय उनके शब्दों और कार्यों के अनुसार ही कर सकते हैं, जबकि परमेश्वर हमारे हृदयों को जांचता है. वह उस प्रत्येक पाप को जानता है जिसका पश्चाताप नहीं किया गया है. प्रत्येक आज्ञा उल्लंघन को स्पष्ट रूप से स्वर्गीय पुस्तकों में लिखा गया है, और संतों को यह जानने की अनुमति मिलेगी कि दुष्टों का न्याय उनके कामों के अनुसार हुआ है. यह तो एक व्यक्तिगत सवाल उठाता है; क्या आपको यह अच्छा लगेगा कि कोई और आपकी गुप्त बातों को जाने ? क्या आप चाहते हैं कि वे आपके प्रत्येक बुरे काम के बारे में जान जायें ? उस पाप को भी, जो आपने सब से छुपा कर किया है ? ... यदि आप नहीं चाहते कि संत लोग आप के जीवन के अंधेरे पहलुओं को जानें, तो भला है कि आप आज ही अपने सब गुप्त पापों को मसीह पर डाल दें कि वह उनका प्रायश्चित्त कर सके. उद्धार पाने की कुछ शर्तें हैं. आपको और मुझे सनातन जीवन देने के लिए यीशु ने सब कुछ पूरा कर दिया है. लेकिन उद्धार का दान स्वीकार या अस्वीकार करना हमारे हाथ में हैं. उद्धारकर्ता का निमंत्रण स्पष्ट है : **"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है"** (1 युहन्ना 1 : 9). प्रिय मित्र, अपने जीवन में पाप को मत रहने दीजिये. इसे यीशु के कदमों के पास रख दीजिये. अनुग्रह और साहस के लिये प्रार्थना कीजिये कि जिनके विरूद्ध आपने पाप किया है, उनसे क्षमा याचना कर के आप उनसे मेल कर लें, और यीशु आपको क्षमा प्रदान करेगा. फिर आप पाप से स्वतंत्र हो जायेंगे. यीशु में पाये जाने के कारण आप दूसरों के न्याय का अवलोकन करेंगे, और दूसरे लोग आपके गुप्त पापों को जान कर आपको दोषी न ठहरा सकेंगे. परमेश्वर करे कि आप कठोर हृदय और घमण्ड को त्याग कर प्रभु के सामने नम्र और दीन बनें. सम्मान से पहले नम्रता आती है. यह हमें अभी करना होगा. जबकि **रहम का दरवाज़ा** खुला हुआ है, कि हम प्रभु के सामने नम्र और दीन बन कर मेम्ने के लोहू द्वारा अपने सभी पापों से छूटकर उसके आगमन के लिए तैयार हो जायें.

शैतान एक हज़ार वर्ष के लिए बांधा जायेगा

अब हमने सीख लिया है कि धर्मी लोग हज़ार वर्ष तक स्वर्ग में रहेंगे और न्याय में भाग लेंगे. लेकिन दुष्टों का क्या होगा? क्या वे इस पृथ्वी पर जीवित पाये जायेंगे, जबकि धर्मी लोग स्वर्ग में रहेंगे? या अपश्चातापी लोगों का क्या होगा ?

हम पढ़ते हैं कि दूसरे आगमन के समय यीशु अपनी महिमा में आयेगा. धर्मी लोग ही उस ऐश्वर्य का सामना कर सकेंगे, क्योंकि बाइबल के अनुसार केवल वे ही लोग परमेश्वर का दर्शन कर सकेंगे जिनके मन शुद्ध हैं, लेकिन अशुद्ध मन और नाशमान देह वाले लोग प्रभु के तेज़ के सामने जीवित न रह सकेंगे.बाइबल यीशु की वापसी का वर्णन इस प्रकार करती है : **"और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने अपने स्थान से टल गया. और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतंत्र, पहाड़ों की खोहों में, और चट्टानों में जा छिपे. और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो, और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो. क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है ?"** (प्रकाशितवाक्य 6 : 14 – 17). केवल धर्मी लोग ही ठहर सकेंगे. केवल वे ही परमेश्वर का चेहरा देखकर जीवित रह सकेंगे. क्योंकि उन के मन शुद्ध होंगे. और वे एक महिमामय अविनाशी देह प्राप्त कर चुके होंगे. दूसरों की देह नाशमान और भ्रष्ट होगी और उनके हृदय पाप से भरे हुए होंगे. वे यीशु के महिमामय आगमन को सहन न कर सकेंगे. इसलिए वे मर जायेंगे. वे पहाड़ों और चट्टानों से कहेंगे, "**हम पर गिर पड़ो और हमें उसकी दृष्टि से छिपा लो**".

इस प्रकार दुष्ट लोग, यीशु के आगमन को देख कर मर जायेंगे. शैतान के पास प्रलोभन देने के लिए कोई नहीं रहेगा और वह पृथ्वी पर यूंही भटकता रहेगा. बाइबल उसकी इस दशा का वर्णन इस प्रकार से करती है : **"फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिसके हाथ में अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी ज़ंज़ीर थी. और उसने उस अज़गर, अर्थात् पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ कर हज़ार वर्ष के लिए बांध दिया. और उसे अथाह कुंड में डालकर बंद कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हज़ार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाये; इस के बाद अवश्य है कि थोड़ी देर के लिए फिर खोला जाये"** (प्रकाशितवाक्य 20 : 1 – 3). शैतान तो परिस्थितियों से बांधा जायेगा. भरमाने के लिए उसके पास कोई नहीं होगा, यीशु के आगमन के बाद धर्मी लोग स्वर्ग को चले जायेंगे और सब दुष्ट मर चुके होंगे. बाइबल इस दृश्य का वर्णन इस प्रकार करती है: **"देखो, यहोवा का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दयता के साथ आता है कि वह पृथ्वी को उजाड़ डाले और पापियों को उसमें से नाश करे"** (यशायाह 13 : 9).

सपन्याह नबी इस स्थिति का वर्णन इस प्रकार से करता है: **"यहोवा का भयानक दिन निकट है, वह बहुत वेग से समीप चला आता है; यहोवा के दिन का शब्द सुन पड़ता है, वहाँ वीर दुःख के मारे चिल्लाता है. वह रोष का दिन होगा, वह संकट और सकेती का दिन, वह उजाड़ और उधेड़ का दिन, वह अंधेर और घोर अंधकार का दिन, वह बादल और काली घटा का दिन होगा. वह गढ़वाले नगरों और ऊँचे गुम्मटों के विरूद्ध नरसिंगा फूंकने और ललकारने का दिन होगा. मैं मनुष्यों को संकट में डालूंगा, और वे अंधों की नाईं चलेंगे, क्योंकि उन्होंने यहोवा के विरूद्ध पाप किया है; उनका लोहू धूलि के समान, और उनका मांस विष्ठा की नाईं फेंक दिया जायेगा. यहोवा के रोष के दिन में, न तो चाँदी से उनका बचाव होगा, और न सोने से; क्योंकि उसके जलन की आग से सारी पृथ्वी भस्म हो जायेगी; वह पृथ्वी के सारे रहने वालों को यबराकर उनका अंत कर डालेगा"** (सपन्याह 1 : 14 – 18). इस विषय में हम एक कथन यिर्मयाह नबी का भी जोड़ेंगे : **"मैंने पृथ्वी पर देखा, वह सूनी और सुनसान पड़ी थी; और आकाश को, और उसमें कोई ज्योति नहीं थी. मैंने पहाड़ों को देखा, वे हिल रहे थे, और सब पहाड़ियों को कि वे डोल रही थीं. फिर मैं क्या देखा कि कोई मनुष्य भी न था और सब पक्षी उड़ गये थे. फिर मैं क्या देखता हूँ कि यहोवा के प्रताप और उस भड़के हुए प्रकोप के कारण उपजाऊ देश जंगल, और उसके सारे नगर खण्डहर हो गये थे"** (यिर्मयाह 4 : 23 – 26).

एक हज़ार वर्ष के बाद

एक हज़ार वर्ष के बाद क्या होगा ? अधर्मी दुष्ट लोग उनकी कब्रों में से जिलाये जायेंगे. यह दूसरा पुनरूत्थान होगा. बाइबल इसका वर्णन इस प्रकार करती है : **"और जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे"** (प्रकाशितवाक्य 20 : 5). एक हज़ार वर्ष के बाद एक बार और इस पृथ्वी पर जन सैलाब होगा. पृथ्वी ऐसे अधर्मी लोगों से भर जायेगी जिन्होंने यीशु का तिरस्कार किया और उसके पीछे नहीं चले (1 पतरस 2 : 21 – 24). जब वे पुनः अपने उन्हीं पापपूर्ण मनों और नाशमान और महिमा रहित शरीरों के साथ जी उठेंगे जैसे वे मरने के समय इस पृथ्वी पर थे, पुनः विद्रोह और अभिलाषाएं जाग जायेंगी.

इस समय केवल अधर्मी ही क्रियाशील नहीं होंगे किन्तु शैतान भी अपनी क़ैद से आज़ाद कर दिया जायेगा. फिर उसके पास भरमाने के लिए एक बार फिर एक बड़ी भीड़ उपलब्ध होगी. बाइबल इस कहानी को बताती है : **"और जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे, तो शैतान क़ैद से छोड़ दिया जायेगा"** (प्रकाशितवाक्य 20 : 7). यह आगे कहती है, **"और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात् याजूज और माजूज को जिनकी गिनती समुद्र की बालू के बराबर होगी, भरमा कर लड़ाई के लिए इकठ्ठे करने को निकलेगा. और वे सारी पृथ्वी पर फैल जायेंगी, और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी: और आग स्वर्ग से उतर कर उन्हें भस्म करेगी"** (प्रकाशितवाक्य 20 : 8 – 9).

यही याजूज और माजूज का युद्ध है. कुछ लोग सिखाते हैं कि यह युद्ध **1000 वर्ष के काल** से पहिले होगा, लेकिन हमने अभी पढ़ा है कि यह युद्ध 1000 वर्ष के काल के बाद होगा. उसी समय शैतान सब अधर्मियों को प्रिय नगरी नये यरूशलेम, जो उस समय तक अपने पति के लिए श्रृंगार किए हुई एक दुल्हिन के समान सुन्दरता में स्वर्ग से पृथ्वी पर आ चुकी होगी, के विरूद्ध युद्ध करने को निकलेगा. बाइबल इस नगरी का वर्णन प्रकाशितवाक्य के 21वें अध्याय में करती है : **"फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो"** (प्रकाशितवाक्य 21 : 2).

नया यरूशलेम जलपाई के पर्वत पर उतरता है

ज़कर्याह नबी लिखता है कि स्वर्गीय नगर नया यरूशलेम जलपाई के पर्वत पर उतरेगा. लिखा है : **"और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर पांव धरेगा, जो पूरब ओर यरूशलेम के सामने है; तब जलपाई का पर्वत पूरब से लेकर पश्चिम तक बीचो बीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जायेगा; तब आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्षिण की ओर हट जायेगा. तब तुम मेरे बनाये हुए उस खड्ड से हो कर भाग जाओगे, क्योंकि वह खड्ड आसेल तक पहँचेगा, बरन तुम ऐसे भागोगे जैसे उस भुईडोल के डर से भागे थे जो यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में हुआ था. तब मेरा परमेश्वर यहोवा आएगा, और सब पवित्र लोग उसके साथ होंगे"** (ज़कर्याह 14 : 4 - 5).

यहां हम देखते हैं कि धर्मी लोग 1000 वर्ष स्वर्ग में बिताने के बाद स्वर्गीय नगर नये यरूशलेम के साथ जलपाई के पर्वत पर उतरेंगे. बाइबल कहती है, क्या यह नहीं कहती कि, **"तब मेरा परमेश्वर यहोवा आयेगा, और सब पवित्र लोग उसके साथ होंगे?"** इस प्रकार उस समय धर्मी लोग एक बार और इस पृथ्वी पर, जिसमें धार्मिकता निवास करेगी, पैर रखेंगे. याजूज और माजूज का युद्ध तब होगा. हम पढ़ते हैं कि शैतान स्वर्गीय नगर नये यरूशलेम की ओर कूच करेगा. वह परमेश्वर, स्वर्गदूतों और सब उद्धार पाये हुओं के विरूद्ध लड़ाई करने के लिए सब दुष्ट, अधर्मियों को इकत्र करेगा. शैतान और दुष्ट अधर्मी लोग पवित्र नगर नये यरूशलेम को छीनने के लिये घेर लेंगे. आग स्वर्ग से उतर कर उन्हें भस्म करेगी. इस प्रकार शैतान, और उसके दुष्ट दूत, **वह पशु, झूठा भविष्द्धवकता** और सभी धर्मों व कलीसियाओं के वे सब लोग जिन्होंने यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार नहीं किया, सदैव के लिए भस्म कर दिये जायेंगे (प्रकाशितवाक्य 20 : 7 - 10). वे अपने चुनाव का परिणाम भोगेंगे. उन्होंने यीशु का नहीं किन्तु अपना ही मार्ग चुना था. वे अपने अगुवों से कहेंगें, **"तुम हमें ग़लत मार्ग पर क्यों ले कर गये ? तुम ने हमें यह क्यों सिखाया कि हम पाप करने के बावजूद आनन्द मना सकते थे; और अन्त में हमारा उद्धार निश्चित था ? तुम ने "शांति-सुरक्षा" का संदेश क्यों प्रचार किया?"** तब तक बहुत देर हो चुकी होगी. फिर वे आशारहित होकर अनन्त दण्ड को भोगेंगे.

अपनी दूसरी पत्री में पतरस लिखता है, **"आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त हो कर पिघल जायेंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जायेंगे"** (2 पतरस 3 : 10). यूहन्ना लिखता है : **"पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्ति पूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गंधक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है"** (प्रकाशितवाक्य 21 : 8). जैसा कि हमने देखा : बाइबल आग की झील को दूसरी मृत्यु कहती है (प्रकाशितवाक्य 20 : 14). यदि नर्क कुछ है तो वह बाइबल के अनुसार अधर्मियों की भयानक पीड़ा है. बाइबल के अनुसार, **"उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया "** (प्रकाशितवाक्य 20 : 12 - 13). **"और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया"** (प्रकाशितवाक्य 20 : 15).

मलाकी नबी आग के दण्ड का वर्णन इस प्रकार करता है: **"क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूंटी बन जायेंगे; और उस आने वाले दिन में ऐसे भस्म हो जायेंगे कि उनका पता तक न रहेगा,उनकी न जड़ न डालियाँ छोड़ेगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है"** (मलाकी 4 : 1).

दुष्ट लोग भूसे के समान जल जायेंगे. भूसे का कच्चा और बड़ा ढेर देर तक जलेगा जबकि सूखा और छोटा ढेर जल्दी जल कर राख हो जायेगा. यह दिखाता है कि कुछ लोग लम्बा दण्ड (कष्ट का समय), जबकि दूसरे थोड़े समय तक कष्ट का दण्ड पायेंगे और फिर भस्म हो जायेंगे. आग की झील में उनके सताव और कष्टों का अन्त अनन्त मृत्यु में होगा. दुष्टता के कारणों का अन्त हो जायेगा. बुराई और ईश्वर रहित दुष्ट लोग सफाई करने वाली आग में जड़ और शाखाओं सहित नाश हो जायेंगे. शैतान बुराई की जड़ है और उसके मानने वाले शाखाऐं हैं. व्यवस्था उल्लंघन का दण्ड मिल जायेगा और धार्मिकता की मांग पूरी हो जायेगी. स्वर्ग और पृथ्वी घोषणा करेंगे कि **परमेश्वर धर्मी है.**

फिर मृत्यु और पीड़ा, शोक और निराशा, लालच और व्यभिचार आदि बुराइयाँ सदैव के लिए समाप्त हो जायेंगी, क्योंकि तब बुराई के कारण को समाप्त कर दिया जायेगा.

एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी

इसी दौरान परमेश्वर एक नये आकाश और एक नई पृथ्वी का सृजन करेगा. यूहन्ना इस अद्भुत नये सृजन के परिणाम को इन शब्दों में बयान करता है: **"फिर मैं ने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा"** (प्रकाशितवाक्य 21 : 1). पाप के कारण जो कुछ नष्ट हो गया वह पुनः स्थापित किया जायेगा. नयी पृथ्वी धर्मियों का अनन्त निवास स्थान बनेगी. **"धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और उसमें सदा बसे रहेंगे"** (भजन संहिता 37 : 29).

हमारे भविष्य के पारितोषिक को अत्यन्त भौतिक बनाने के डर से बहुतों ने इसे इतना अधिक आत्मिक बनाने का प्रयास किया है कि इस का मूल सार जिस कारण हम इसे अपना घर मानें, अर्थहीन होता नज़र आता है. मसीह ने अपने चेलों को आश्वासन दिया कि वह उन के लिए पिता के घर में रहने के लिए स्थान तैयार करने जाता है. परमेश्वर के वचन की शिक्षा स्वीकार करने वाले स्वर्गीय निवास के विषय पूरी तरह अंजान न होंगे. फिर भी **"जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की हैं"** (1 कुरिन्थियों 2 : 9). धर्मियों को मिलने वाले प्रतिफल का वर्णन मानवी भाषा में असंभव है. इसे तो वे ही जानेंगे जो अपनी आखों से देखेंगे. सीमित बुद्धि वाला कोई जन परमेश्वर के स्वर्गलोक को समझ ही नहीं सकता. बाइबल में, उद्धार पाये हुए लोगों के प्रतिफल को एक **'स्वदेश'** कहा गया है (इब्रानियों 11 : 14 - 16). जहाँ स्वर्गीय चरवाहा अपने झुण्ड को जल के सोतों के पास लेकर जायेगा. जीवन के पेड़ में हर महीने फल लगेंगे और इस के पत्तों से देश-देश के लोग चंगे होंगे. वहां बिल्लौर के समान स्वच्छ बहती जल धाराऐं होंगी; और प्रभु के द्वारा छुड़ाये हुओं के लिए छाया देने के लिए मार्गों के दोनों ओर छायादार पेड़ होंगे. विशाल रूप से फैले मैदानों में पहाड़ियों की सुन्दरता और परमेश्वर के पर्वतों की ऊँची शानदार चोटियां होंगी. उन बहती जल धाराओं के किनारे शांतिपूर्ण मैदानों में परमेश्वर के लोग जो बड़े लम्बे समय से परदेशी और यात्री रहे हैं, अपने लिये घर बनायेंगे.

"मेरे लोग शांति के स्थानों में निश्चिंत रहेंगे, और विश्राम पायेंगे. तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात व अंधेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम "उद्धार" और अपने फाटकों का नाम "यश" रखेगी. वे घर बनाकर उन में बसेंगे ; वे दाख की बारियां लगाकर उन का फल खायेंगे. ऐसा नहीं होगा कि वे बनायें और दूसरा बसे, वा वे लगायें और दूसरा खाये... मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठायेंगे!" (यशायाह 32 : 18, 60 : 18, 65 : 21, 22).

वहां, **"जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे. मरूभूमि मगन होकर केसर की नई फूलेगी. तब भटकटैया की सन्ती सनोवर उगेंगे, और बिच्छू पेड़ों की सन्ती मेहंदी उगेगी. तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के संग रहा करेगा... और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा. मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; यहोवा यूं कहता है"** (यशायाह 35 : 1, 55 : 13, 11 : 6, 9).

स्वर्ग के वातावरण में पीड़ा नहीं रह सकती है. वहाँ आंसू, शव यात्राएं और शोक की पट्टियां दिखाई न देंगी. **"इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी... पहली बातें जाती रहीं, कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूँ, और जो लोग उस में बसेंगे, उनका अधर्म क्षमा किया जायेगा"** (प्रकाशितवाक्य 21 : 4, यशायाह 33 : 24).

वहाँ नया यरूशलेम, ऐश्वर्यपूर्ण नयी पृथ्वी की राजधानी होगा! **"तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट और अपने परमेश्वर की हथेली में राज मुकुट ठहरेगी. और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की नई स्वच्छ थी, यहोवा यूं कहता है, मैं आप यरूशलेम के कारण मगन और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा: परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है वह उनके साथ डेरा करेगा; और वे उसके लोग होंगे और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा"** (यशायाह 62 : 3; प्रकाशितवाक्य 21 : 11[...] यशायाह 65 : 19; प्रकाशितवाक्य 21 : 3).

परमेश्वर के नगर में **रात** न होगी. किसी को न तो आराम की चाहत होगी और न ही आवश्यकता होगी. परमेश्वर के नाम की बढ़ाई करने और उसकी इच्छा पूरी करने में किसी को कोई थकावट न होगी. हम सदा सुबह सी ताज़गी महसूस करेंगे जो कभी समाप्त न होगी. उन्हें दीपक और सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा (प्रकाशितवाक्य 22 : 5). सूर्य की रोशनी अपनी चमक में अत्याधिक तेज़ दोपहर से भी अधिक होगी लेकिन इस से किसी की आँखों को कोई हानि न पहुंचेगी. परमेश्वर और मेम्ने की कभी समाप्त न होने वाली महिमा से नगर भर जायेगा. उद्धार पाये हुए लोग निरन्तर बने रहने वाले सूर्य रहित प्रकाश में चला करेंगे.

"और मैंने उस में कोई मंदिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर है" (प्रकाशितवाक्य 21 : 22). पिता और पुत्र से वार्तालाप करना परमेश्वर के लोगों का सौभाग्य है' **"अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है"** 1 कुरिन्थियों 13 : 12. हमें परमेश्वर का प्रतिबिम्ब एक दर्पण से परावर्तित होता हुआ सृष्टि में उसके कार्यों और मनुष्यों के साथ उसके व्यवहार के द्वारा नज़र आता है, लेकिन उस समय हम उसे बिना किसी परदे के आमने-साम्हने देखेंगे. हम उस की उपस्थिति में खड़े होकर उसके चहरे के प्रताप को निहारेंगे.

परमेश्वर के प्रेम की विजय

"वहां उद्धार प्राप्त लोग ऐसे जानेंगे जैसे वे जाने गये हैं". परमेश्वर ने जो प्रेम और हमदर्दी हमारे दिलों में पैदा की है वहां सर्वोत्तम और मधुरतम रूप में प्रकट होगी. स्वर्गीय प्राणियों से शुद्ध वार्तालाप, धन्य स्वर्गदूतों के साथ, सभी युगों के उन विश्वासयोग्य लोंगों के साथ सामंजस्य पूर्ण जीवन होगा जिन्होंने अपनी पोशाकों को मेम्ने के लोहू में धोकर श्वेत किया है. एक पवित्र बंधन स्वर्ग और पृथ्वी के संपूर्ण परिवार में पाया जायेगा (इफिसियों 3 : 15). ये बातें मिलकर छुड़ाये हुओं के लिए आनन्द का कारण बनेंगी.

वहां अविनाशी मन कभी समाप्त न होने वाले आनन्द के साथ सृष्टिकर्ता की सामर्थ और उद्धारकर्ता के रहस्यमय प्रेम का मनन करेगा. वहां परमेश्वर को भुलाने के लिए धोखा देने वाला कोई निर्दयी शत्रु नहीं होगा. प्रत्येक योग्यता का विकास होगा और प्रत्येक क्षमता की वृद्धि होगी. ज्ञानार्जन न तो मन को थकायेगा और न ही शक्तियों का ह्रास ही होगा. वहां महानतम कार्यों को आगे बढ़ाया जायेगा, और सर्वोच्च मनोकामनाओं की पूर्ति होगी; और फिर भी सदैव नई ऊँचाईयां चढ़ने के लिए, नये अजूबे सराहने के लिए, नयी सच्चाइयां समझने के लिए, नई वस्तुएं मन और आत्मा की शक्तियों को गतिशील बनाये रखने के लिए प्राप्त होती रहेंगी.

परमेश्वर द्वारा छुड़ाये हुओं के अध्ययन के लिए विश्व के सब खज़ाने खोल दिये जायेंगे. अविनाशी देह में वे अपने थकन रहित पंखों को खोलकर संसारों की उड़ाने भरेंगे. उन संसारों की उड़ान जो मानव की पीड़ा से दुखी हो जाते थे और एक आत्मा के उद्धार से आनन्द से गाने लगते थे. वर्णन से परे आनन्द के साथ इस पृथ्वी की संतान पाप रहित प्राणियों के आनन्द और बुद्धि में शामिल होंगे. वे युगों युगों से परमेश्वर की सृजन शक्ति का ज्ञान उनके साथ बाटेंगे. कभी समाप्त न होने वाली दृष्टि से वे सृष्टि की महिमा को देखेंगे कि कैसे सूर्य, तारे और सौरमण्डल, सब अपनी-अपनी कक्षा में परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर चक्कर लगाते हैं. सभी छोटी से लेकर बड़ी वस्तुओं पर सृष्टिकर्ता का नाम लिखा है- और उन सब में उसकी सामर्थ की भरपूरी प्रकट होती है.

अनन्त काल के वर्ष जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, वे परमेश्वर और मसीह की महिमा और ऐश्वर्य का और अधिक प्रकटीकरण करते जायेंगे. मनुष्य जितना अधिक परमेश्वर को जानेगा उतना ही अधिक उसके चरित्र को सराहेगा. जब मसीह मनुष्य के छुटकारे के भेद और शैतान के साथ महान विवाद में प्राप्त अद्भुत उपलब्धियों का वर्णन करता है, उद्धार पाये हुओं के हृदय और भी अधिक भक्ति और श्रृद्धा से भर जाते हैं और उसी पल लाखों-लाख लोग वर्णन से परे आनन्द के साथ सोने की वीणाओं को उठाकर परमेश्वर की महिमा करते सामर्थी समूह गान में शामिल हो जाते हैं. **"फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उनमें हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे"**
(प्रकाशितवाक्य 5 : 13).

महान विवाद समाप्त हो गया है. पाप और पापी नष्ट हो गये हैं. समस्त विश्व स्वच्छ है. पूरी सृष्टि में एक अद्भुत एकरूपता है, सामंजस्य है. सृष्टिकर्ता की ओर से जीवन, और प्रकाश, और प्रसन्नता असीमित दायरों तक फैलता है. सब से छोटे अणु से लेकर सबसे बड़े संसार तक, सभी वस्तुएं चाहे जीवित हों या निर्जीव, अपनी स्पष्ट सुन्दरता में एक ही घोषणा करती हैं, कि **परमेश्वर प्रेम है"** ई.जी.व्हाइट की पुस्तक महान विवाद (द ग्रेट कन्ट्रोवर्सी) के पृष्ट 674 - 678.

अनन्त की दहलीज़ पर

समय के चिन्ह छत पर खड़े सतर्क पहरेदार के समान चीख-चीख कर कह रहे हैं कि संसार का उद्धारकर्ता यीशु मसीह बहुत शीघ्र आने वाला है. प्रतीक्षा के दौरान ही हमें बड़े संघर्ष से गुजरना होगा. अन्त समय तक अच्छाई और बुराई में संघर्ष और भी व्यग्र होता जायेगा. अन्तिम घटनाएं तेजी से घटेंगी जैसी की एक गर्भवती पर जच्चा की पीड़ायें आती हैं (सपन्याह 1 : 14; रोमियों 9 : 28; 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 1-3). इसलिए यह आवश्यक है कि हम यीशु के पक्ष में होने का फैसला आज ही करें. और फिर हर दिन, हर घण्टा, हर मिनट, और हर सेकेण्ड मसीह के पक्ष में ही बने रहें.

यीशु इस पृथ्वी पर हमारा आदर्श बन कर आया. परमेश्वर होने पर भी उसने नम्र होकर अपने ईश्वरत्व को ढक कर मानवता की देह धारण की. परमेश्वर होने पर भी वह मनुष्य होकर आया (यूहन्ना 1 : 1 - 3, 14; फिलिप्पियों 2 : 5 - 8). मनुष्य रूप में उसने हमें यह दिखाया कि हम कैसे जयवंत हो सकते हैं. ठीक यीशु के समान जब वह इस पृथ्वी पर था वह पाप पर जयवंत होने के लिए परमेश्वर से सामर्थ प्राप्त करता था. उसी प्रकार हमें भी प्रत्येक समस्या में जयवंत होने के लिए परमेश्वर से सामर्थ प्राप्त करना है. ठीक जैसे एक शाखा को जीवित रहने के लिए पेड़ में पूरी रीति से बने रहना होता है, उसी प्रकार से हमें भी पाप करने से बचने के लिए यीशु मसीह में निरन्तर ही बने रहना है. यदि हम पाप करते हैं, तो दोष हमारा है, यीशु का नहीं (यूहन्ना 15 : 4 - 5). वह आपको कभी निराश न करेगा! यदि हम गिर गये हैं तो हमें तुरन्त ही यीशु की ओर लौटकर उसके फैले हुए हाथों को पकड़ कर पश्चाताप करना, अपने पापों को स्वीकार करना और यीशु की क्षमा को कृतज्ञता से स्वीकार कर लेना चाहिए, ताकि यीशु के साथ हमारा उद्धार देने वाला सम्बंध बना रहे (1 यूहन्ना 2 : 1 - 2).

मसीह के दूसरे आगमन से पहले ही आपका मन शुद्ध होना चाहिए

बाइबल कहती है कि कोई अपवित्र वस्तु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करने पायेगी (प्रकाशितवाक्य 21 : 27). सो दूसरे आगमन के समय यीशु हमारे पापों में हमें बचाने, या हमारे मनों को अशुद्धता से साफ करने के लिए नहीं आयेगा. यदि हमें उस के साथ जाना है, जब वह अपने लोगों को इकत्र करने आयेगा तो सफाई का काम यीशु के आगमन से पहले ही पूरा हो जाना चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 5 : 23; इफिसियों 1 : 4; 5 : 27; प्रकाशितवाक्य 7 : 14; 14 : 1 - 5). यीशु हमारे लिए मरा, कलवरी क्रूस पर उसका लोहू आपके और मेरे लिए बहा. लेकिन-केवल जो कोई उस पर विश्वास करेगा, नाश न होगा, परन्तु अनन्त जीवन पायेगा (यूहन्ना 3 : 16). आइये हम अनुग्रह और उद्धार का दान अभी स्वीकार करें, और उस से सामर्थ पाकर नये जीवन की सी चाल चलें! उसके पास पर्याप्त सामर्थ है!

सदैव तैयार रहें!

आइये हम अपने मनों को निरन्तर स्वर्ग की ओर लगाये रखते हुए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन बितायें. फिर हम अपने मसीही जीवन में सामर्थ पर सामर्थ प्राप्त करते जायेंगे. अन्तिम महान संघर्ष में, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाले और यीशु का विश्वास रखने वाले **पशु की छाप** स्वीकार नहीं करेंगे, **"परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से अपने माथे पर, परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे"** (प्रकाशितवाक्य 13 : 16, 14 : 9 - 10, यहेजकेल 9 : 4, प्रकाशितवाक्य 7 : 2 - 4, 22 : 14). हमारी प्रार्थना है कि आप और हम उस के लिए सदैव तैयार रहें. फिर जब वह अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने विश्वास योग्य लोगों को लेने के लिए आयेगा तो हम जगत के उद्धारकर्ता यीशु मसीह के साथ जा सकें (1 थिस्सलुनीकियों 4 : 15 - 17).
आशा है आप से वहाँ मुलाकात अवश्य होगी!

धन्य आशा में आपके
बेंटे और एबेल स्ट्रउक्सनेस

अवकत मैसी
Hindi Translator
24-A, Prem Nagar Colony,
Nariyal Kheda, Bhopal - 462 038
M.P. (North India)
Mobile : 09827 266186, 09993 304778
E-mail : heraldofadvent@yahoo.com

[Back to the Main Page!]

This page belongs to Abel Struksnes. For more information, contact Kristen Informasjonstjeneste, Bente og Abel Struksnes, Solberg, 3522 Bjoneroa, Norge, or send me an e-mail at abels@online.no